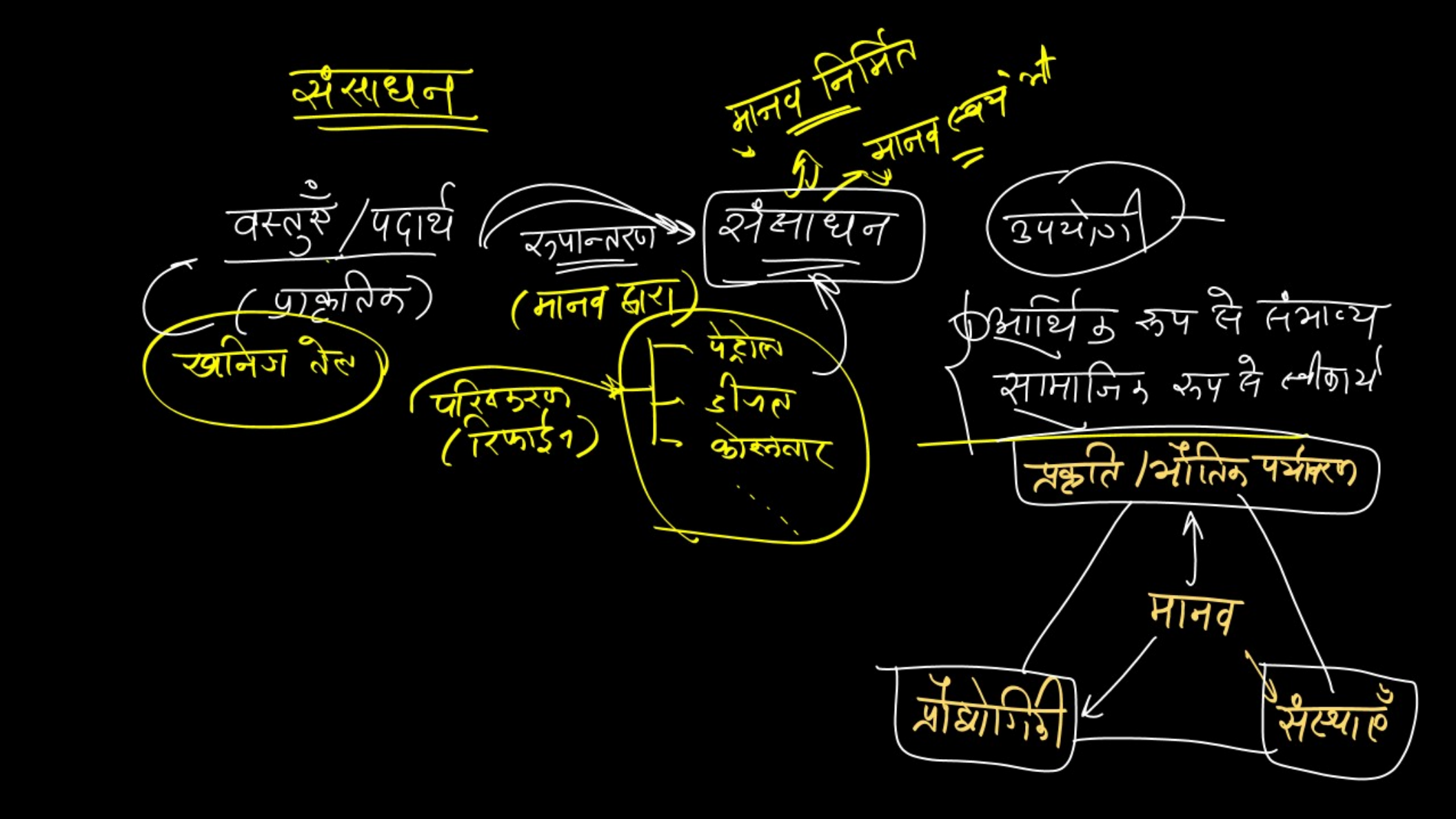
10th Geography

1th → संसाधन एवं विकास

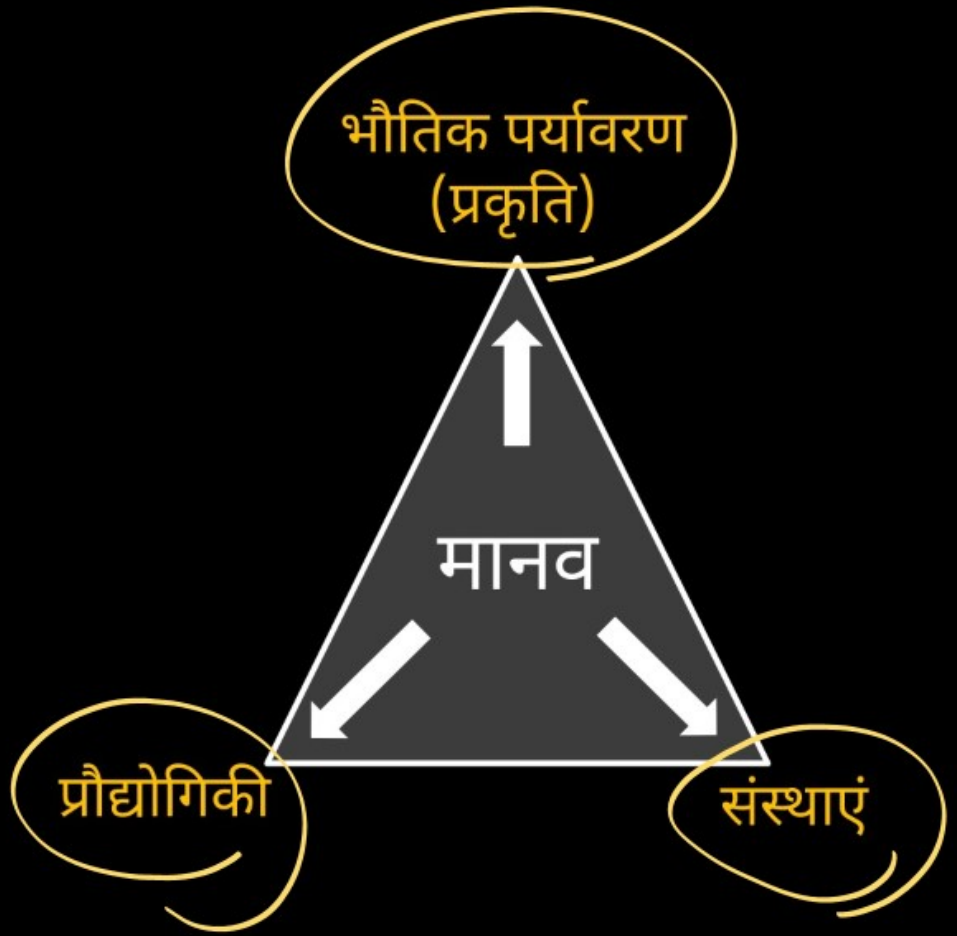

संसाधन
मानव निर्मित
मानव स्वयं भी
=
वस्तुएँ / पदार्थ
(प्राकृतिक)
खनिज तेल
रूपान्तरण
(मानव द्वारा)
परिष्करण
(रिफाईन)
संसाधन
पेट्रोल
डीजल
कोरतनार
उपयोगी
आर्थिक रूप से संभाव्य
सामाजिक रूप से स्वीकार्य
प्रकृति / भौतिक पर्यावरण
मानव
प्रौद्योगिकी
संस्थाएँ



संसाधन

हमारे पर्यावरण में उपलब्ध प्रत्येक वस्तु :-

- जो आवश्कताओं को पूरा करने में प्रयुक्त
- जिसको बनाने के लिए प्रौद्योगिकी उपलब्ध
- जो आर्थिक रूप से संभाव्य
- जो सांस्कृतिक रूप से मान्य


भौतिक पर्यावरण
(प्रकृति)
मानव
प्रौद्योगिकी
संस्थाएं



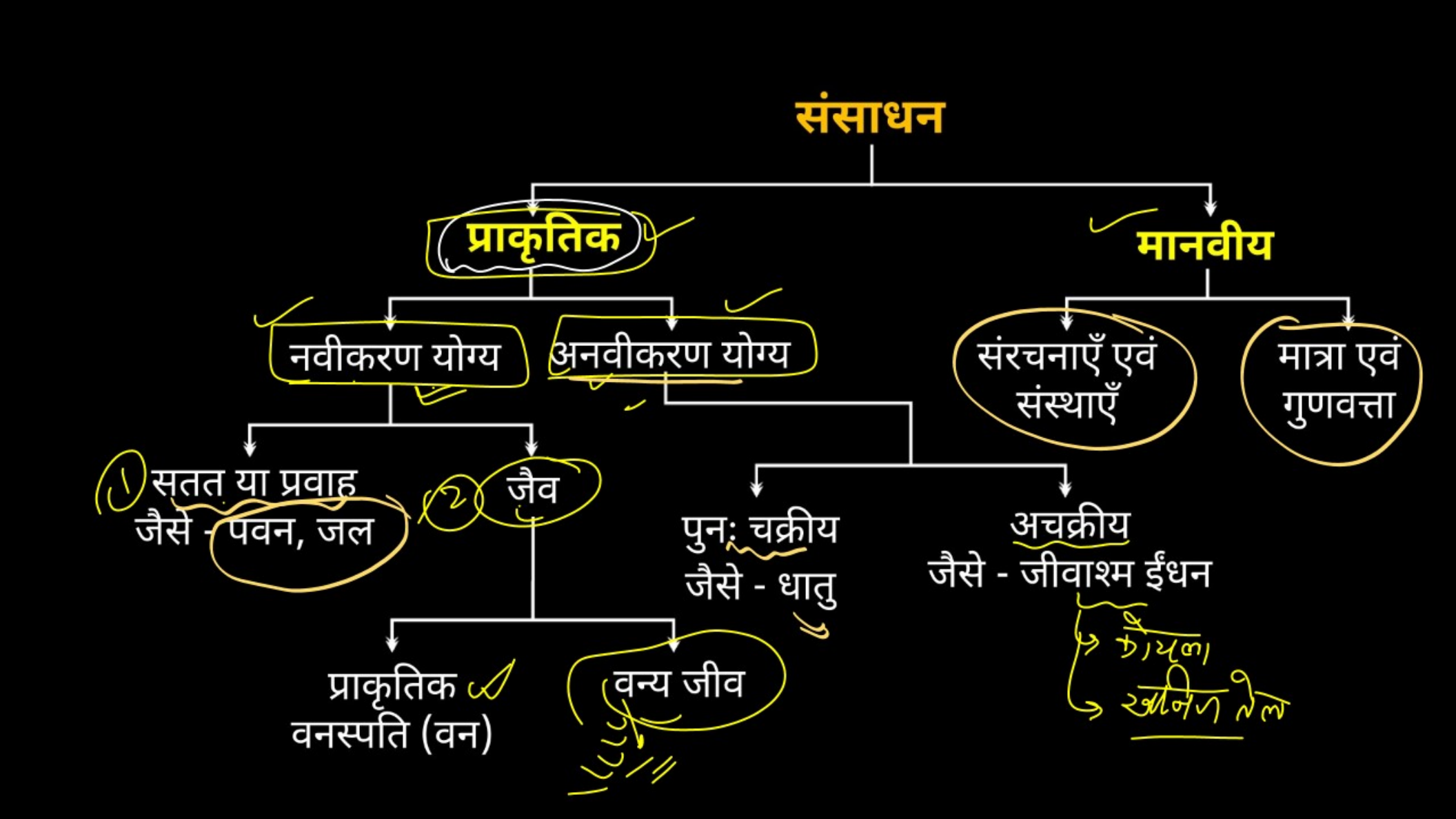
संसाधनों का वर्गीकरण

(क) उत्पत्ति के आधार पर :- जैव , अजैव

(ख) समाप्यता के आधार पर :- नवीकरणीय, अनवीकरणीय

(ग) स्वामित्व के आधार पर :- व्यक्तिगत, सामुदायिक, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय

(घ) विकास के स्तर के आधार पर :- विकसित, संभावी, भंडार, संचित कोष


संसाधन
प्राकृतिक
मानवीय
नवीकरण योग्य
अनवीकरण योग्य
संरचनाएँ एवं संस्थाएँ
मात्रा एवं गुणवत्ता
सतत या प्रवाह
जैसे - पवन, जल
जैव
पुन: चक्रीय
जैसे - धातु
अचक्रीय
जैसे - जीवाश्म ईंधन
कोयला
खनिज तेल
प्राकृतिक वनस्पति (वन)
वन्य जीव

परिभाषा
वर्गीकरण

Q.① संसाधन को परिभाषित कीजिए।

Q.② निम्नलिखित आधारों पर संसाधनों का वर्गीकरण कीजिए-
(i) उत्पत्ति (ii) स्वामित्व (iii) समाप्यता

Q.③ प्राकृतिक संसाधनों का वर्गीकरण कीजिए?

पदार्थ → प्रकृति प्रदत्त
संसाधन → मानव निर्मित

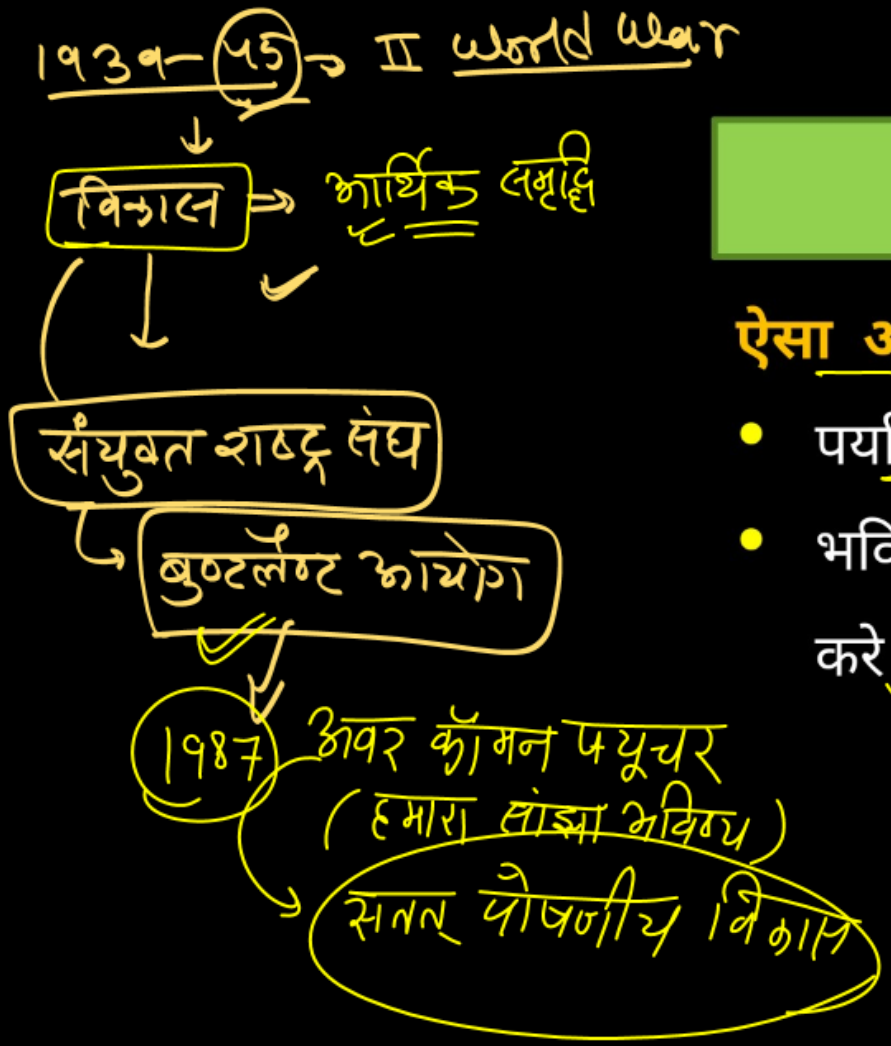
संसाधनों का विकास

- मनुष्य के जीवन यापन के लिए अति आवश्यक हैं
- जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं।

लेकिन, मानव ने इनका अंधाधुंध शोषण किया है, जिससे कई समस्याएँ पैदा हो गई हैं—

अविवेकपूर्ण उपयोग
↓
समस्याएँ

1. ह्रास
2. सामाजिक समस्या
   - संसाधन सम्पन्न अमीर
   - गरीब संसाधन विहीन
3. पर्यावरण - पारिस्थितिकीय समस्याएँ



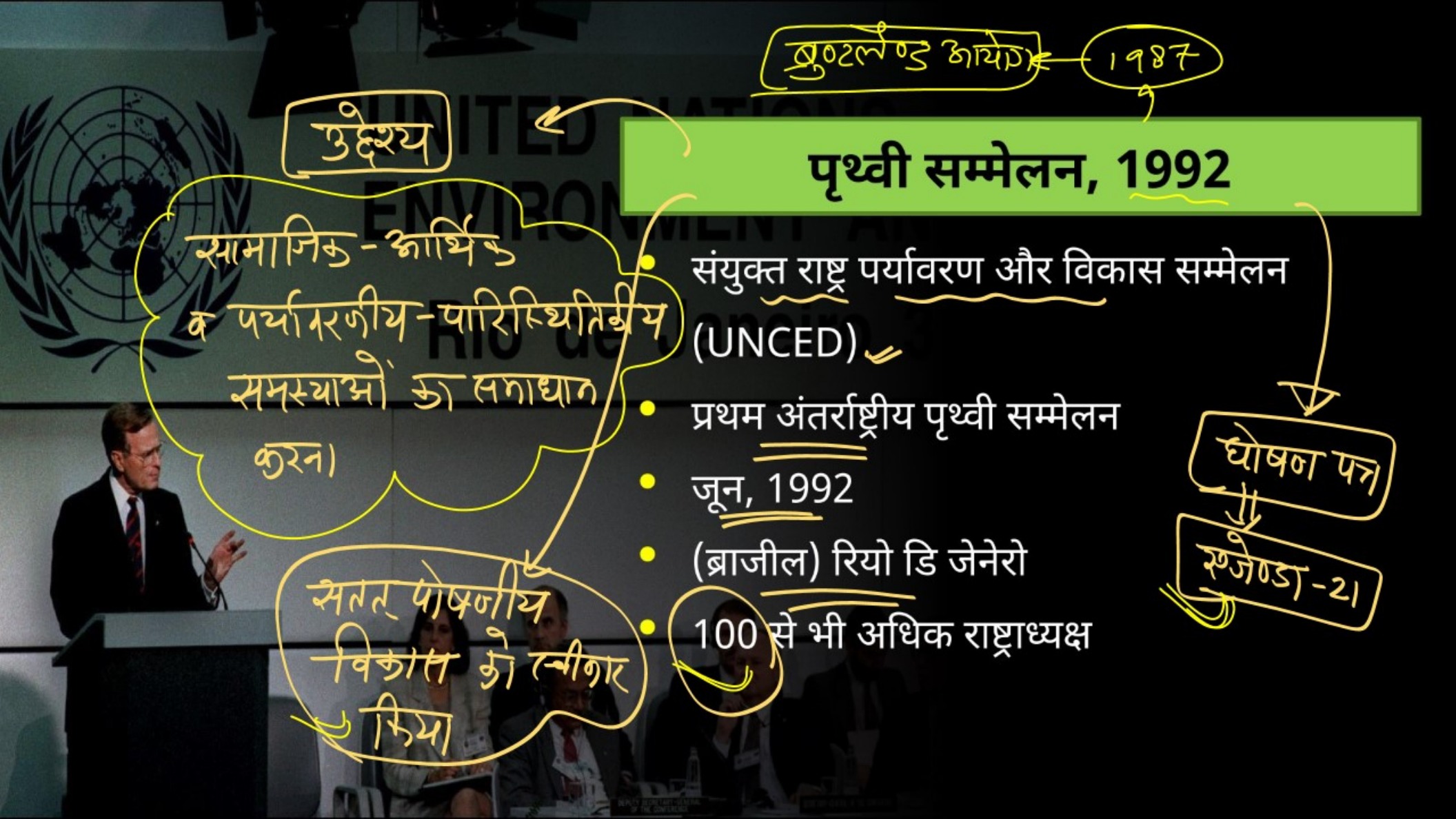
सतत् पोषणीय विकास

ऐसा आर्थिक विकास जो—

- पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाए हो
- भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकता की अवहेलना न करे।

Q.① संसाधनों के अविवेकपूर्ण उपयोग से कौन-२ सी समस्याएँ उत्पन्न होती है?

Q.② सतत् पोषणीय विकास को परिभाषित कीजिए।


ब्रुण्टलैण्ड आयोग
1987
उद्देश्य
सामाजिक-आर्थिक व पर्यावरणीय-पारिस्थितिकीय समस्याओं का समाधान करना।
पृथ्वी सम्मेलन, 1992
संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (UNCED)
प्रथम अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी सम्मेलन
जून, 1992
(ब्राजील) रियो डि जेनेरो
100 से भी अधिक राष्ट्राध्यक्ष
सतत् पोषणीय विकास को स्वीकार किया
घोषणा पत्र
एजेण्डा-21

Q.1 एजेण्डा -21 के उद्देश्य क्या है?

Q.2 एजेण्डा-21 का मुख्य उद्देश्य :-

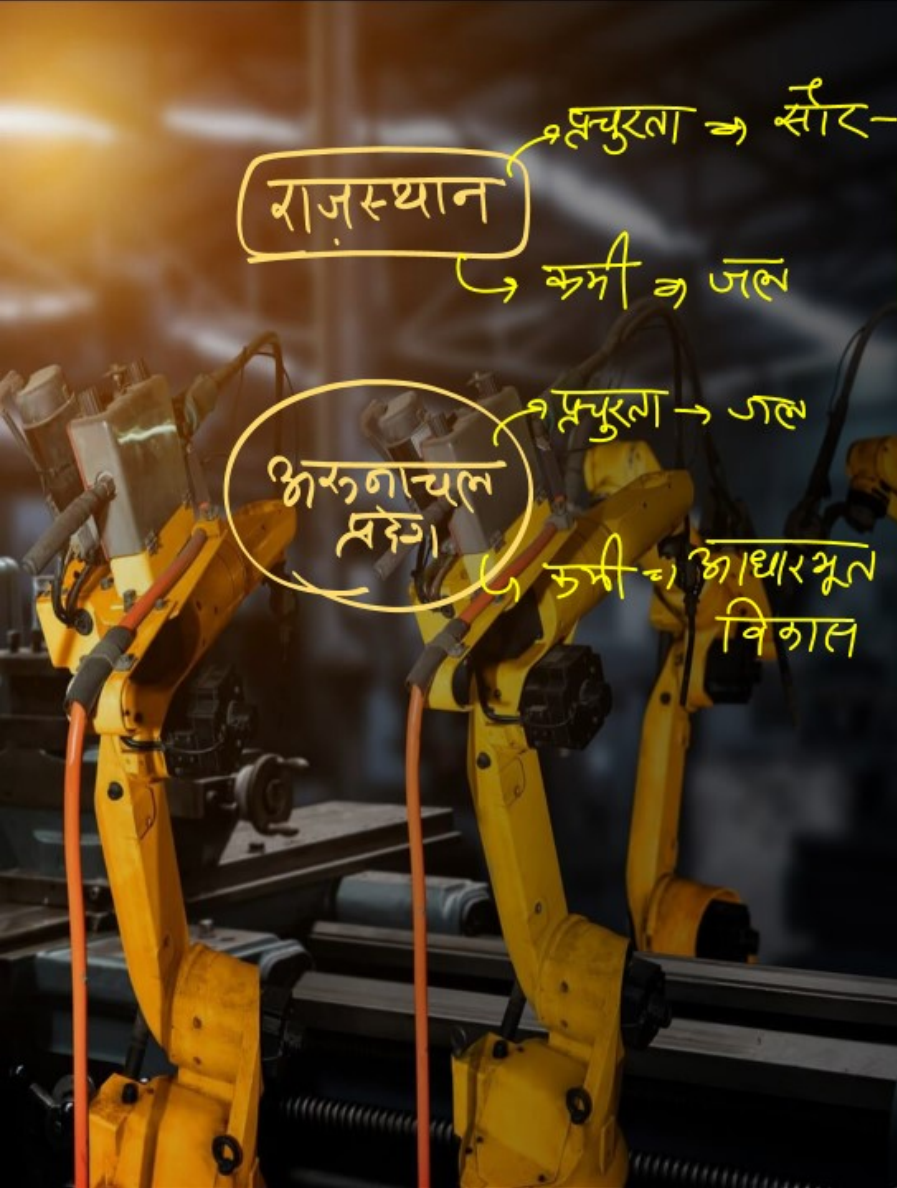
Ans. प्रत्येक स्थानीय निकाय अपना एजेण्डा-21 तैयार करें

एजेंडा 21

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (UNCED) के तत्त्वाधान में राष्ट्राध्यक्षों द्वारा स्वीकृत किया गया था।

उद्देश्य –

- सतत् पोषणीय विकास हासिल करना।
- समान हितों, पारस्परिक आवश्यकताओं एवं सम्मिलित जिम्मेदारियों के अनुसार विश्व सहयोग के द्वारा पर्यावरणीय क्षति, गरीबी और रोगों से निपटना।



संसाधन नियोजन

- संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए नियोजन एक सर्वमान्य रणनीति है।
- भारत जैसे देश में जहाँ संसाधनों की उपलब्धता में बहुत अधिक विविधता है, यह और भी महत्त्वपूर्ण है।
- यहाँ ऐसे प्रदेश भी हैं जहाँ एक तरह के संसाधनों की प्रचुरता है, परंतु दूसरे तरह के संसाधनों की कमी है।

Q.① भारत में संसाधन नियोजन की आवश्यकता क्यों होती है?

Q.② भारत में संसाधन नियोजन के सोपान (चरण) बताइए।

भारत में संसाधन नियोजन

संसाधन नियोजन एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें निम्नलिखित सोपान हैं —

(क) देश के विभिन्न प्रदेशों में संसाधनों की पहचान कर उनकी तालिका बनाना ।

क्षेत्रीय सर्वेक्षण, मानचित्र बनाना और संसाधनों का गुणात्मक एवं मात्रात्मक अनुमान लगाना ।

(ख) संसाधन विकास योजनाएँ लागू करने के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी, कौशल और संस्थागत नियोजन ढाँचा तैयार करना ।

(ग) संसाधन विकास योजनाओं और राष्ट्रीय विकास योजना में समन्वय स्थापित करना ।



संसाधनों का संरक्षण

- संसाधन किसी भी तरह के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।
- परंतु, संसाधनों का विवेकहीन उपभोग और अति उपयोग के कारण कई सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

Q.1) हमें संसाधनों का संरक्षण क्यों करना चाहिए?

गाँधीजी → प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ति हेतु हमारे पास बहुत कुछ है परन्तु किसी के लालच की पूर्ति के लिए नहीं। (पेट भरने के लिए बहुत है, पेटी भरने हेतु नहीं)

Q.0 गाँधीजी के अनुसार संसाधनों के ह्रास के लिए कौन जिम्मेदार है?

Ans. → लालची व्यक्ति
→ आधुनिक तकनीक से तीव्र / अंधाधुंध उत्पादन

1968 → क्लब ऑफ रोम → संसाधन दोहन की पड़ताल की।

1974 → पुस्तक → स्मॉल इज ब्यूटिफुल

→ लेखक → शुमेलर

→ गाँधीजी के दर्शन की पुनः आवृत्ति

1987 → ब्रुंटलैण्ड आयोग →

1992 → प्रथम पृथ्वी सम्मेलन →

मूलभूत आवश्यकताएँ

मकान, भोजन, वस्त्र

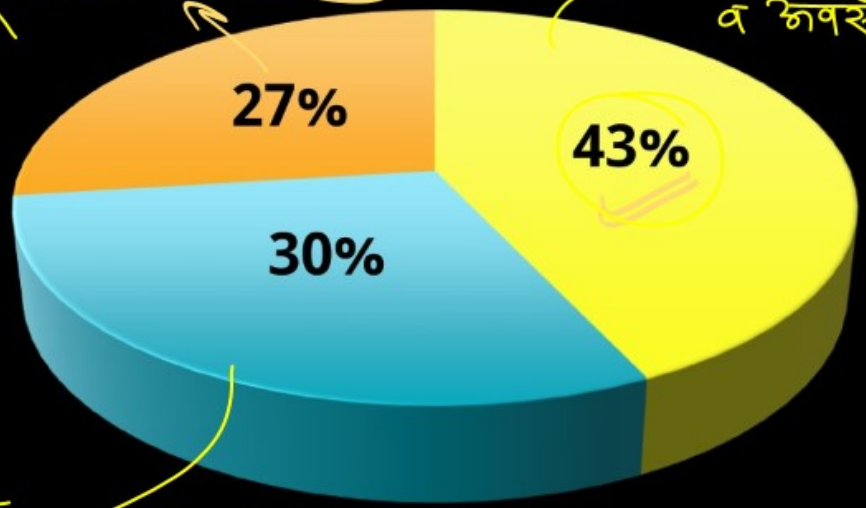
95% प्राप्ति

भारत

भू-संसाधन

खनिज सम्पन्न

कृषि, उद्योग व अवसंरचना

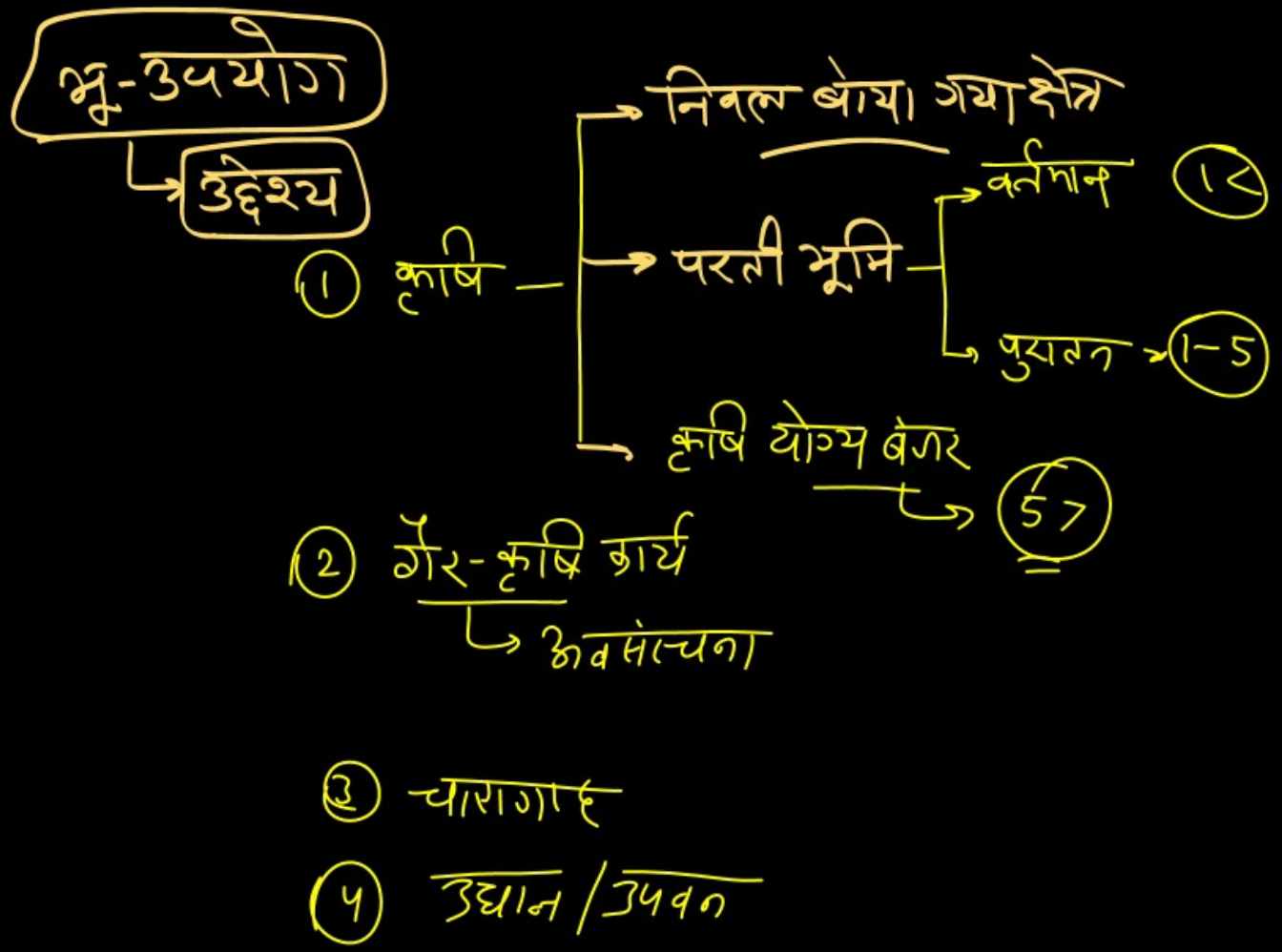


32 87 263 वर्ग km.

पर्यटन

नदियों का उद्गम

मैदान पर्वत पठार


भू-उपयोग
उद्देश्य
① कृषि
निवल बोया गया क्षेत्र
परती भूमि
वर्तमान
12
पुरातन
1-5
कृषि योग्य बंजर
57
② गैर-कृषि कार्य
अवसंरचना
③ चारागाह
④ उद्यान/उपवन



भू-उपयोग

भू-संसाधनों का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों से किया जाता है—

1. वन
2. कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि
   (अ) बंजर तथा कृषि अयोग्य भूमि
   (ब) गैर-कृषि प्रयोजनों में लगाई गई भूमि

जैसे– इमारतें, सड़क, उद्योग इत्यादि ।

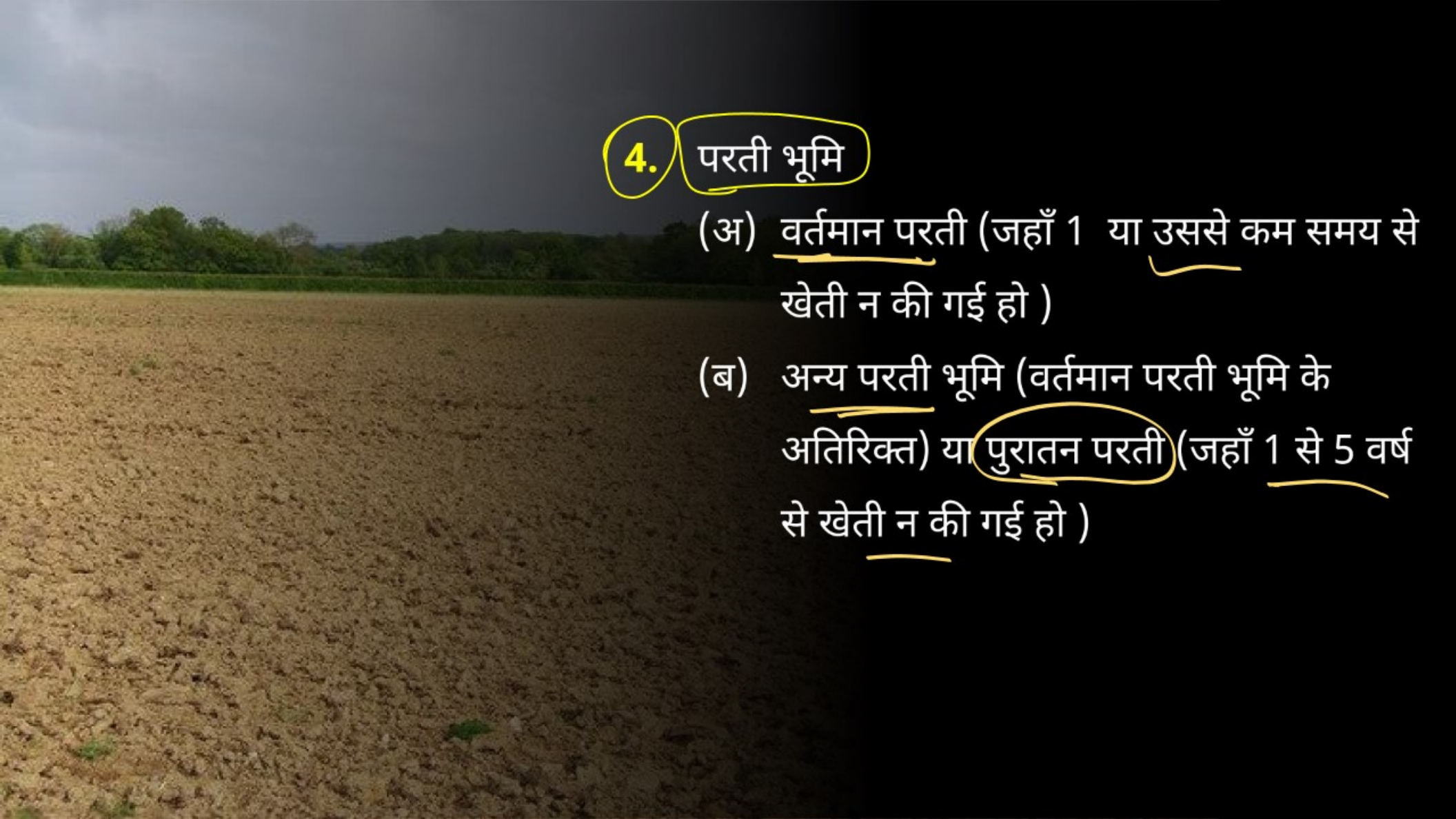


3. परती भूमि के अतिरिक्त अन्य कृषि अयोग्य भूमि

(अ) स्थायी चरागाह ← पशुचारण

(ब) विविध वृक्षों तथा उपवनों के अधीन भूमि

(स) कृषि योग्य बंजर भूमि जहाँ 5 से अधिक वर्षों से खेती न की गई हो।



4. परती भूमि

(अ) वर्तमान परती (जहाँ 1 या उससे कम समय से खेती न की गई हो)

(ब) अन्य परती भूमि (वर्तमान परती भूमि के अतिरिक्त) या पुरातन परती (जहाँ 1 से 5 वर्ष से खेती न की गई हो)



5. शुद्ध (निवल) बोया गया क्षेत्र

- वह भूमि, जिस पर फसलें उगाई व काटी जाती हैं, वह **शुद्ध बोया गया क्षेत्र** कहलाता है।
- एक वर्ष में एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र को, शुद्ध बोए गए क्षेत्र में जोड़ दिया जाए, तो वह **सकल कृषित क्षेत्र** कहलाता है।

भारत में भू-उपयोग प्रारूप

↳ क्षे॰ च॰ 32 87 263 वर्ग किमी॰

↳ सर्वे → 93% क्षेत्रफल

J&K:

① जम्मू-कश्मीर ⇒ पाक व चीन का अवैध कब्जे वाला क्षेत्र

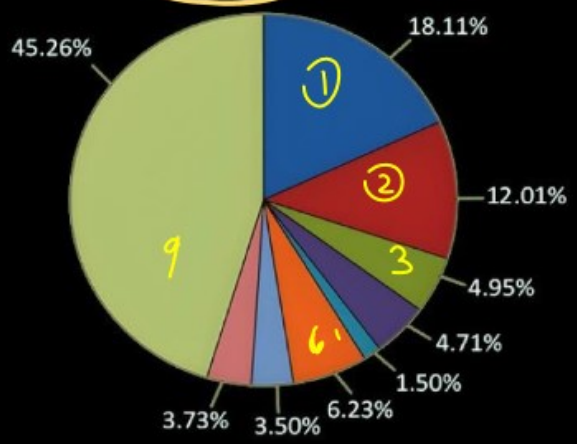
② पूर्वोत्तर भारत के कुछ

अधिकतम कृषि क्षेत्र% 54%

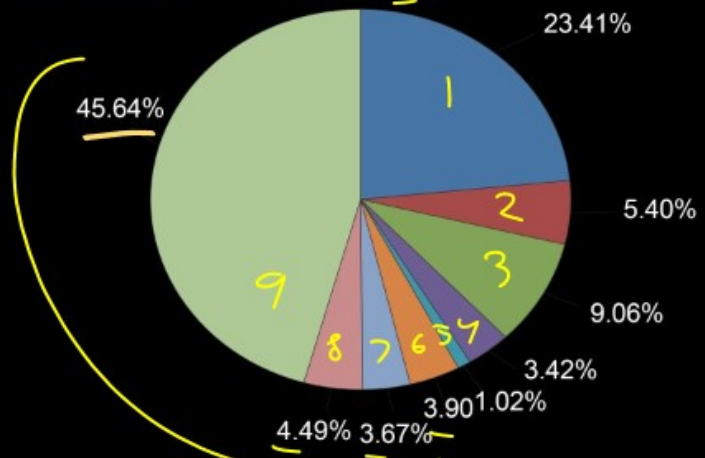
सामान्य भू-उपयोग

प्रतिवेदित क्षेत्र 100 प्रतिशत

1960-61



2019-20



1. वन
2. बंजर तथा कृषि अयोग्य भूमि
3. गैर-कृषि प्रयोजनों के अंतर्गत क्षेत्र
4. स्थायी चारागाहें तथा अन्य गोचर भूमि
5. विविध वृक्षों, वृक्ष फसलों तथा उपवनों के अंतर्गत क्षेत्र
6. कृषि योग्य बंजर भूमि
7. परती भूमि के अतिरिक्त अन्य पुरातन परती
8. वर्तमान परती
9. शुद्ध (निवल) बोया गया क्षेत्र

निवल बोया गया क्षेत्र

क्षेत्रीय विविधता

(1) पंजाब - हरियाणा → 80%

(2) अण्डमान-निकोबार, → 10%

राष्ट्रीय वन नीति (1952)

↳ उद्देश्य

वन संसाधनों का संरक्षण

1/3 भौगोलिक क्षेत्र पर वन

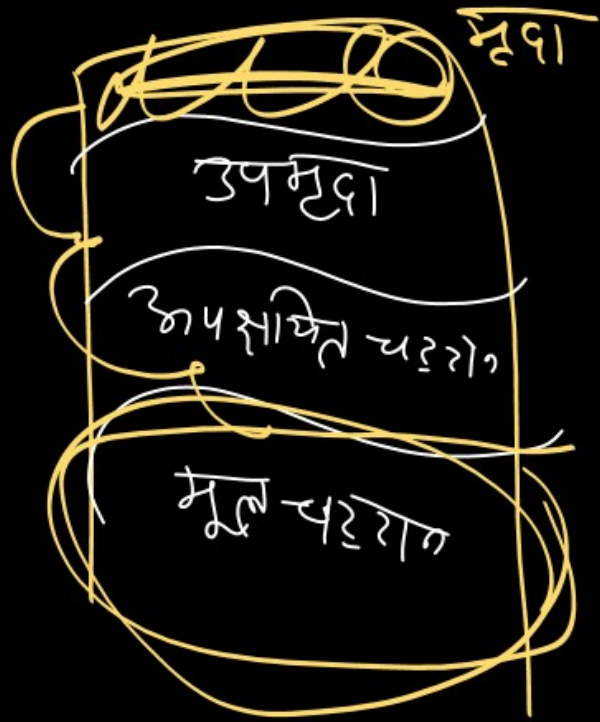
उपाय

भूमि निम्नीकरण और संरक्षण उपाय

कारण

1. अति पशुचार → राज०, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश।
2. अति सिंचाई ⇒ पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उ० प्र०
3. खनन व वनोन्मूलन → झारखण्ड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश
4. उद्योग → सीमेण्ट → चूना पत्थर पीसना
   मिट्टी बर्तन → खड़िया व गैरखड़ी पीसना

मृदा संसाधन



मृदा बनने की प्रक्रिया में मुख्य कारक—

- उच्चावच
- जनक शैल (संस्तर शैल)
- जलवायु
- वनस्पति और अन्य जैव पदार्थ
- समय

ह्यूमस →

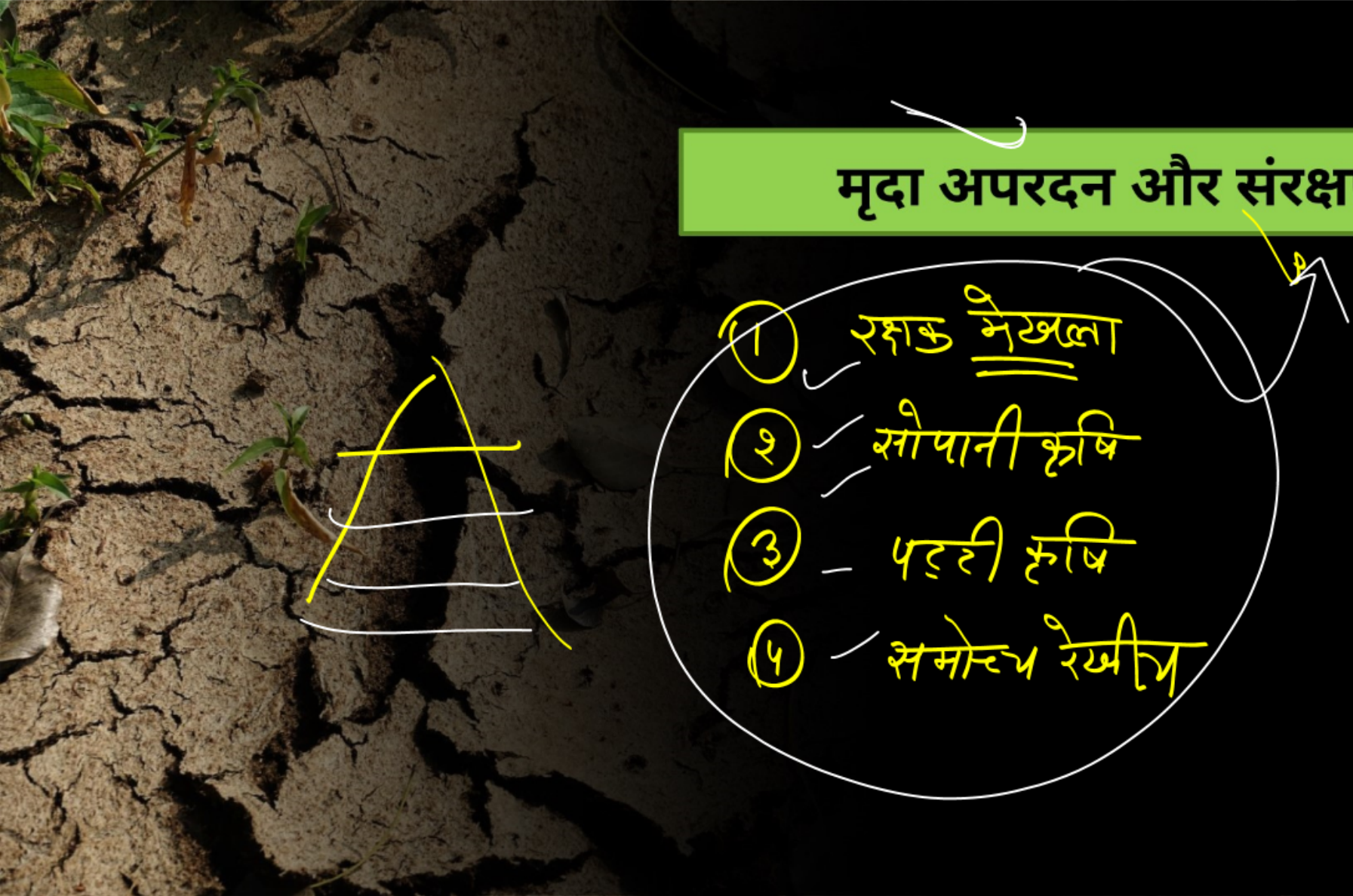
मृदाओं का वर्गीकरण

भारत की मृदाओं के निम्नलिखित प्रकार हैं—

- जलोढ़ मृदा
- काली मृदा
- लाल और पीली मृदा
- लेटराइट मृदा
- मरुस्थली मृदा
- वन मृदा


जलोढ़ मृदा
काली मृदा
लाल और पीली मृदा
लेटराइट मृदा
मरुस्थली मृदा
वन मृदा

मृदा अपरदन और संरक्षण



1. रक्षक मेखला
2. सोपानी कृषि
3. पट्टी कृषि
4. समोच्च रेखीय